## पद १५५ (राग: पिलु – ताल: दादरा) हरिभजनीं मन धर की प्राण्या। पडशिल नरकीं।।ध्रु.।। प्रीती जडो

हरिचे भजनासीं। विषया पाहनि मागें सर कीं।।१।। टाकुनि देह

भवाब्धि पसारा। संत दर्शनासी मर कीं।।२।। माणिक म्हणे

नरजन्मा येउनी। सुफल कांहीं तरी कर कीं।।३।।